महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
*(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)*

# शिक्षा में परिवर्तन के लिए समाज का ब्ल्यू प्रिंट हो तैयार -न्यायमूर्ति धर्माधिकारी

## देशज शिक्षा पर अंतररराष्ट्रीय संगोष्ठी का न्यायमूर्ति धर्माधिकारी ने किया उदघाटन

*देशज शिक्षा पर आयोजित संगोष्ठी में वक्तव्य देते हुए न्यायमूर्ति चन्द्रशेखर धर्माधिकारी। मंच पर दाए से कुलसचिव डॉ. के. जी. खामरे, कुलपति विभूति नारायण राय तथा प्रो. मनोज कुमार*

वर्धा दि.30 मार्च 2012:महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में देशज शिक्षा पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के उदघाटन समारोह में शुक्रवार को न्यायमूर्ति चंद्रशेखर धर्माधिकारी ने कहा कि भारतीय शिक्षा को हमने आवश्यकता आधारित शिक्षा के बजाय टुकड़ों में बांटकर लालच आधारित बना दिया है। शिक्षा के सभी विधाओं में विशेषज्ञता प्रधान शिक्षा प्रणाली के चलते समान शिक्षा कायम नहीं हो सकी। हमने माना था कि शिक्षा से समस्या सुलझेगी परंतु शिक्षा की खुद एक समस्या बन गयी है। हमें चाहिए कि

परिवर्तन के लिए समान शिक्षा, समान अवसर और स्त्री पुरूष समानता हेतु समाज का ब्ल्यू प्रिंट तैयार हो। न्यायमूर्ति धर्माधिकारी ने उक्त बातें विश्वविद्यालय के हबीब तनवीर सभागार में कही। समारोह की अध्यक्षता कुलपति विभूति नारायण राय ने की। इस अवसर पर कुलसचिव डॉ. के. जी. खामरे तथा संस्कृति विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. मनोज कुमार मंचस्थ थे।

न्यायमूर्ति धर्माधिकारी ने अपने महत्वपूर्ण वक्तव्य में शिक्षा प्रणाली से हम क्या चाहते हैं यह सवाल उठाते हुए कहा कि पब्लिक स्कूल, कॉन्वेंट स्कूल, नगरपालिका स्कूल तथा आश्रम शाला आदि विभिन्न प्रकार के शालाओं में शिक्षण का प्रावधान है परंतु इससे समान शिक्षा का उद्देश्य कही भी दिखायी नहीं देता। शिक्षा नीचे से ऊपर तक पहुंचनी चाहिए थी परंतु यह भी नहीं हुआ। आज जरूरतमंद लोगों को चीजें नहीं मिलती और जिसे आवश्यकता नहीं होती वैसे खरीदार को चीजें आसानी से मिल जाती है। शिक्षा और रोजगार के संबंधों का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि खेती में प्रतिष्ठा के अभाव के चलते सब कुछ करेंगे लेकिन खेती नहीं ऐसी भावना पैदा हो रही है। श्रम प्रतिष्ठा का जो सिद्धांत गांधी जी ने दिया था वह आज शिक्षा प्रणाली में प्रदर्शित नहीं हो रहा है। उन्होंने उत्पादक श्रम के समाज की स्थापना की बात करते हुए कहा कि आज त्याग और भोग पर आधारित संस्कृति पनप रही है जिससे रास्ते चौड़े मगर दिल छोटे हो रहे है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि विश्वविद्यालय के स्तर पर ऐसे आयोजनों के माध्यम से शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन को दिशा मिल सके जिससे शिक्षा का मूल उद्देश्य फलीभूत होने में मदद मिल सकेगी।

उदघाटन समारोह के मुख्य वक्ता के रूप में विचार रखते हुए प्रो. मनोज कुमार ने कहा कि देशज शिक्षा पर आधारित संगोष्ठी के माध्यम से आधुनिकता और परंपराओं के बीच खोज की जानी चाहिए। उन्होंने आशा व्यक्त की कि नई दिशा और नई धारा के माध्यम से गांधी विचार को वैज्ञानिक आयाम देने का काम इस चर्चा के द्वारा किया जाएगा। अध्यक्षीय उदबोधन में कुलपति विभूति नारायण ने धर्मपाल के कथन का हवाला देते हुए कहा कि अंग्रेजों ने सन 1820 में शिक्षा व्यवस्था में हस्तक्षेप किया उस समय लॉर्ड मैकाले का विरोध हुआ था। उन्होंने राजा राम मोहन राय द्वारा शिक्षा के लिए किये गये प्रयास का भी उल्लेख किया। समारोह का संचालन साहित्य विद्यापीठ के असिस्टेंट प्रोफेसर अरूणेश शुक्ल ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन कुलसचिव डॉ. के. जी. खामरे ने किया। इस अवसर पर देश-विदेश से आए अतिथि, प्रतिभागी तथा छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।

बी. एस. मिरगे
जनसंपर्क अधिकारी

# हिंदी विश्वविद्यालय के संग्रहालय को
# पद्मा सचदेव ने सौंपे लता मंगेशकर के पत्र

***कुलपति विभूति नारायण राय को लता मंगेशकर के पत्र और पांडुलिपियां सौंपते हुए पदमा सचदेव।***

**वर्धा दि. 30 मार्च 2012– डोगरी की प्रसिध्द कवयित्री तथा** हिंदी की जानी मानी लेखिका पद्मा सचदेव ने हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति विभूति नारायण राय को अपनी रचनाओं की पांडुलिपियां और जाने–माने लेखकों–कलाकारों के सैकड़ों पत्र सौंपे। ये पांडुलिपियां और पत्र सहजानंद सरस्वती संग्रहालय में रखे जाएंगे। जिन लेखकों कलाकारों के पत्र सौंपे गए हैं उनमें प्रमुख हैं : दिनकर, बच्चन, धर्मवीर भारती, लता मंगेशकर, अमृतलाल नागर, इस्मत चुगताई, इब्ने इंशा तथा आशा भोंसले।

इस मौके पर कुलपति विभूति नारायण राय ने कहा कि पांडुलिपियों के अध्ययन से साहित्य की रचना प्रक्रिया का नया पक्ष सामने आएगा। हम संग्रहालय को और भी विस्तृत रूप देना चाहते हैं। आयोजन में से. रा. यात्री, विजय मोहन सिंह, रामशरण जोशी, राजकिशोर, जयप्रकाश धूमकेतु और सूरज पालीवाल आदि लेखक मौजूद थे।

कार्यक्रम की शुरूआत करते हुए प्रो. सुरेश शर्मा ने कहा कि पद्मा सचदेव ने हिंदी और डोगरी के रचना संसार को बड़ा करने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई है। उनकी जिंदगी साहस से भरी सुंदरता की कहानी है।

अंत में पद्मा सचदेव ने अपनी जिंदगी की कहानी, खुद अपनी जबानी बयान की। किस तरह वे जम्मू के एक छोटे से गांव से अपनी यात्रा शुरू कर यहां तक पहुंची। उन्होंने

बताया कि लता मंगेशकर के साथ उन्होंने लम्बा समय बिताया है। दिनकर उनकी कविताओं के प्रशंसक थे। धर्मवीर भारती ने उन्हें गद्य लिखने की ओर प्रेरित किया।

पद्मा सचदेव ने संग्रहालय को लता मंगेशकर के जो पत्र सौंपे हैं उनमें लता मंगेशकर की जिंदगी के अनछुए पहलू सामने आते हैं। पद्मा जी को लंदन से लिखे पत्र में लता मंगेशकर ने वहां के मौसम का दिलचस्प वर्णन किया है। इन पत्रों से लता मंगेशकर के व्यक्तित्व की सादगी झलकती है। इसी तरह आशा भोसले के पत्रों से पता चलता है कि वे कविता भी लिखती हैं। पद्मा सचदेव ने इस बात पर खुशी जाहिर की कि लता मंगेशकर पर आने वाली उनकी नई पुस्तक 'बड़ी दीदी' का लोकार्पण स्वामी सहजानंद सरस्वती संग्रहालय मे होंगा।

बी. एस. मिरगे

जनसंपर्क अधिकारी